नाहीं तुम बराबरी, सो इन जुबां कही न जाए।
पर मुझे सुख तब होएसी, जब देऊं नैनों सब देखाए।। ९० ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम्हारी बराबरी कोई कर नहीं सकता और न उसके लिए कुछ कह सकता है, पर मुझे चैन तभी पड़ेगा जब सब दुनियां को तुम्हारा मरातबा (दर्जा) क्या है, आंखों से दिखा दूं।

ए किया तुम खातिर, समझ लीजो दिल मांहें।
रूहें मोमिन कदम तले, तित दूजा कोई नांहें।। ९१ ।।

हे मोमिनो! यह खेल तुम्हारे वास्ते किया। यह दिल में अच्छी तरह समझ लो। तुम तो श्री राजजी के चरणों तले मूल मिलावे में बैठे हो जहां दूसरा और कोई नहीं है।

।। प्रकरण ।। २४ ।। चौपाई ।। ८२४ ।।

सनन्ध–नबी नारायण की

कही कजा जो रसूलें, सो नेक सुनाई हम।
पर कहे कोई न समझया, अब कर देखाऊं तुम।। १ ।।

रसूल साहब ने जो कजा के दिन (इन्साफ के दिन) की बात कही थी उसे हमने थोड़ा सा बताया है, पर कहने से कोई समझ नहीं सका, इसलिए अब करके दिखाती हूं।

महंमद दीन देखाइया, और देखाया छल।
भी देखाऊं जाहेर, ज्यों छूट जाए सब बल।। २ ।।

मुहम्मद साहब ने कुरान में दीन को तथा इस छल रूपी संसार को कहा है। अब तुमको मैं जाहिर कर देती हूं जिससे सब संशय मिट जाएं।

अब छल को बल क्या करे, जब देखाऊं बका वतन।
निकाल देऊं जड़ पेड़ से, ल्याए नूर अर्स रोसन।। ३ ।।

जब मैं अखण्ड परमधाम की वाणी को जाहिर कर दूंगी तब माया की कुछ भी शक्ति नहीं चलेगी। मैं इसको जड़ से उखाड़ कर फेंक दूंगी। परमधाम की तारतम वाणी को जाहिर करूंगी।

फरेब की तो तुम सुनी, थिर चर चौदे तबक।
खेल खावंद जो त्रैगुन, सब सब्द बान पुस्तक।। ४ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड के चर और अचर के छल की बात तुमने सुनी है। इस खेल के मालिक ब्रह्मा, विष्णु, महेश की सभी ग्रन्थों में महिमा गाई गई है।

बैकुंठ से पाताल लों, बनि आदम हैवान।
इन बीच की सब कही, ब्रह्मा रुद्र नारायन।। ५ ।।

बैकुण्ठ से पाताल तक जितने भी आदमी या जीव हैं इन सबकी हकीकत बताई है जिनमें ब्रह्माजी, शंकरजी और नारायण भगवान भी शामिल हैं।

अब सुनियो तुम मोमिनों, ए खेल तो कछुए नांहें।
पर कछुक तो देखत हो, जिन रहे संसे दिल मांहें।। ६ ।।

हे मोमिनो! अब तुम सुनो, यह खेल कुछ भी नहीं है, पर देखने में कुछ तो दिख रहा है। इस संशय को भी तुम्हारे दिल से निकाल देती हूं।

Nijanand App

जब जाग अर्स हक देखिए, ए नहीं खेल कछू तब।
पर जोलों हुकमें है खड़ा, तोलों क्यों होए झूठा अब।।७ ।।

जब जागकर अपने घर और श्री राजजी को देखें तो खेल कुछ भी नहीं है, परन्तु जब तक श्री राजजी के हुकम से यह खड़ा है तब तक इसे झूठा कैसे कहा जाए?

ए खेल झूठा जो देखहीं, सो तो सांचे हैं साबित।
तो कहा बड़ों की बुजरकी, जो झूठ न करहीं सत।।८ ।।

इस झूठे खेल को जो देख रहे हैं वह सच्चे तो हैं। फिर बड़ों का (मोमिनों का) बड़प्पन ही क्या रह गया जो इन झूठे जीवों को भी अखण्ड न करें।

जो सांचे सांचा देवहीं, तो कहा बड़ाई बुजरक।
पर खाकी बुत सत होवहीं, तो जानियों महंमद बरहक।।९ ।।

सच्चे मोमिनों को उनके सच्चे घर पहुंचाना कोई बड़प्पन (महानता) नहीं है। यदि इन जीवों को अखण्ड कर देंगे तो मुहम्मद की बातों को सत्य मानना।

महंमद आया नूर पार से, याही खेल के मांहें।
पर इन खेल में का नहीं, सो भी सक राखों नांहें।।१० ।।

मुहम्मद अक्षर के पार अक्षरातीत धाम से इस खेल में आए हैं, परन्तु वह इस खेल के नहीं हैं। यह भी संशय मिटा देती हूं।

नबी और नारायन की, कछुक कहूं पटंतर।
रसूल कहे नूरजमाल की, नहीं नारायन गम अछर।।११ ।।

रसूल साहब और नारायण में क्या अन्तर है? वह मैं बताती हूं। रसूल नूरजमाल की (अक्षरातीत की) बातें बताते हैं, जबकि नारायण को अक्षर तक की सुध (पहचान) नहीं है।

सो तेता ही बोलिया, जो गया जहां लों चल।
अपने अपने मुख से, जाहेर करें मजल।।१२ ।।

जिसकी पहुंच जहां तक है वह वहीं तक बोलते हैं। उन्होंने स्वयं अपने मुख से अपने ठिकाने को जाहिर कर दिया है।

सो सब्द लिखे हैं कागदों, आपे अपनी साख।
जो किन पाई दमड़ी, या किन लाखों लाख।।१३ ।।

शास्त्रों में जो शब्द लिखे हैं उनमें उनकी अपनी ही महिमा है। जिसने जैसा पाया है वैसा ही लिखा है।

मैं न किसी की कम कहूं, न किसी की कहूं बढ़ाए।
जो जैसा तैसा तिन, दोऊ कहूं दृढ़ाए।।१४ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि मैं किसी की कम या ज्यादा नहीं कहती हूं। जो जैसा है, ठीक वैसे ही उसकी पहचान कराकर आपको दृढ़ कर देती हूं।

एते दिन ढांपे हते, सब्द सत असत।
सो अब जाहेर हुए, आई सबों की सरत।।१५ ।।

इतने दिन तक सच और झूठ की वाणी छिपी हुई थी। अब सबके जाहिर होने का समय आ गया है, अतः सब जाहिर हो गया।

Nijanand App

हकीकत हिंदुअन की, सो देखो चित ल्याए।
और जो मुस्लिम की, सो भी देऊं बताए।। १६ ।।

हिन्दू, मुसलमानों की हकीकत ध्यान से देखो। मैं दोनों की हकीक़त बताती हूं।

हिंदू जोड़ू जब करें, ले देवें मन के बंध।
जिन कोई छोड़े किनको, यों पड़ें गफलत फंद।। १७ ।।

हिन्दू जब शादी करते हैं तो दोनों के मनों के बन्धन बांधते हैं कि कोई किसी को छोड़ेगा नहीं। इस तरह से अन्धकार के फंद में फंसे रहते हैं।

मुस्लिम जोड़ू जब करें, मिल पेहेले बांधे सरत।
जिन कोई किनसों दिल बांधे, यों न्यारे रहें गफलत।। १८ ।।

मुस्लिम जब शादी करते हैं तो पहले मेहर (सम्पत्ति) की शर्त बांध लेते हैं। उनमें एक-दूसरे के दिल के बन्धन नहीं होते, इसलिए अन्धकार से दूर रहते हैं।

भी हिंदू मुस्लिम की, कहूं तफावत तुम।
हिंदू हिसाब जमपुरी, मुस्लिम हाथ खसम।। १९ ।।

हिन्दू और मुसलमान का और फर्क बताती हूं। हिन्दू कहते हैं कि मरने के बाद यमराज के पास जाकर हिसाब देना होगा। मुसलमान कहते हैं कि हमारा हाथ खुदा ने पकड़ रखा है।

हिंदुओं ए दृढ़ कर लिया, इत जो करसी करम।
सो जाए आपे अपना, दें हिसाब आगे राए धरम।। २० ।।

हिन्दुओं ने यह निश्चय किया है कि यहां जैसा कर्म करेंगे वैसा ही उन सबका धर्मराज के सामने हिसाब देना होगा।

सो हिसाब दिए पीछे, देह धरें चौरासी लाख।
मन वाचा करम बांध के, कहें हम होत हलाक।। २१ ।।

हिसाब देने के बाद कर्मों के हिसाब से चौरासी लाख योनियों में जन्म की बात हिन्दू मानते हैं। मन, वचन और कर्म से बंधकर मरते हैं।

हिंदू मुए जलावहीं, खाक भी देवें उड़ाए।
जो डंड जम का छूटहीं, तो भी दिल सुन्य को चाहे।। २२ ।।

हिन्दू मुर्दे को जलाकर खाक (राख) उड़ा देते हैं। यमराज के दण्ड के बाद भी उनकी चाहना निराकार तक ही रहती है।

हिसाब मुस्लिम कहावहीं, ए किया दृढ़ दिल।
खुद काजी हस्तक नबी, हम देसी सब मिल।। २३ ।।

मुस्लिम के हिसाब में यह दृढ़ किया जाता है कि हम अपना हिसाब रसूल साहब के द्वारा खुदा से कराएंगे।

दूजा देह धरन का, रसूलें किया नहीं हुकम।
ताए दूजा देह क्यों होवही, जाको हिसाब हाथ खसम।। २४ ।।

रसूल साहब ने दुबारा जन्म होने की बात नहीं कही है। यह ठीक भी है, क्योंकि जिसका हिसाब खुद खुदा करेगा, उसका जन्म दुबारा क्यों होगा?

Nijanand App

मुस्लिम मुए गाड़हीं, बांध उमेद खसम।
तेहेकीक हक उठावहीं, यों सोवें पकड़ कदम।। २५ ।।

मुसलमान इस उम्मीद के साथ मुर्दे को गाड़ देते हैं कि आखिरत के समय खुदा इनको आकर उठाएगा। इस तरह से खुदा के कदम पकड़कर कब्र में सो जाते हैं।

मन के हारे हारिए, मन के जीते जीत।
मनहीं देवे सत साहेबी, मनहीं करे फजीत।। २६ ।।

मन की मान्यता से ही हार-जीत होती है। मन ही परमात्मा से मिलाता है और मन ही अपमानित कराता है।

चल देखाया बड़कों, सब चले जाएं तिन लार।
अब सो क्यों ए ना छूटहीं, जो बांध दई कतार।। २७ ।।

बड़े लोगों ने जो रास्ता चलकर बताया है सब उसी राह से चले जाते हैं और कहते हैं कि यह बन्धन जो बड़ों ने बांधे हैं वह हम नहीं छोड़ सकते।

कोई हिंदू जो बैकुंठ जावहीं, सो भी खेल के मांहें।
ए फना आखिर कहावहीं, पर कायम भिस्त तो नांहें।। २८ ।।

यदि कोई हिन्दू बैकुण्ठ जाता भी है तो वह खेल के अन्दर ही रहता है। आखिर के समय यह नष्ट हो जाता है, क्योंकि बैकुण्ठ अखण्ड नहीं है।

बैकुंठ मिने नारायन जी, जिन मुख स्वांसा वेद।
ए खावंद है खेल का, सो भी कहूं नेक भेद।। २९ ।।

बैकुण्ठ में नारायण भगवान विराजमान हैं। जिनकी सांस से चार वेद निकले हैं। यही नारायण इस खेल के मालिक हैं। इनकी भी थोड़ी हकीकत बताती हूं।

नारायन कहावें निगम, कहें मोहे खबर नहीं खुद।
नबी हक रसूल कहावहीं, कहे मैं ल्याया कागद।। ३० ।।

नारायण अपने को निगम कहकर कहते हैं कि मुझे परमात्मा की खबर नहीं है। रसूल साहब कहते है कि मैं खुदा का कासिद हूं। उनका पैगाम लेकर आया हूं।

ए नबिऐं जाहेर कह्या, मैं हक पे आया रसूल।
दीन मुस्लिम जो होएसी, सो लेसी सब्द घर मूल।। ३१ ।।

रसूल साहब कहते हैं कि मैं खुदा से पैगाम लेकर आया हूं कि जो दीन में पक्के ईमान वाले होंगे वह इसकी हकीकत पहचान लेंगे।

मेरा घर नूर के पार है, और हवा से ख्वाबी दम।
याको मेरी खातिर, भिस्त देसी खसम।। ३२ ।।

रसूल साहब कहते हैं कि मेरा घर अक्षर के पार है और दुनियां सपने की है, यह निराकार से पैदा हुई है। इस दुनियां को मेरे वास्ते खुदा बहिश्त में कायमी देंगे।

कलाम अल्ला ल्याया रसूल, इन मुस्लिम में आकीन।
हुकम सिर चढ़ाइया, जो सबसे बड़ा दीन।। ३३ ।।

अल्लाह की वाणी को रसूल साहब लाए हैं। इसे मुसलमानों ने दृढ़ता से अपने सिर चढ़ाया। यही सबसे बड़ा धर्म है।

Nijanand App

रसूलें खुद को देख के, हुकम लिया दृढ़ाए।
जिन खुद को ना देखिया, तिन सिर करम चढ़ाए।। ३४ ।।

रसूल साहब कहते हैं कि मैंने खुदा को देखा है और उनके हुकम को दृढ़ता से माना है, परन्तु जिन्होंने खुदा को देखा ही नहीं, उन्होंने अपने को कर्मकाण्ड के बन्धन में बांध लिया।

हिंदू और मुस्लिम के, बीच पड़्यो है भरम।
रसूल कहे सब हुकमें, और निगमें दृढ़ाए करम।। ३५ ।।

इसलिए हिन्दू और मुसलमानों के बीच बड़ी भ्रान्ति फैली है। रसूल साहब कहते हैं कि सब खुदा के हुकम से होता है और हिन्दू कहते हैं कि यह सब हमारे कर्मों का फल है।

रसूल हक हुकम बिना, और न काढ़े बोल।
करम दृढ़ाए निगमें दिए, हिंदुओं सिर डमडोल।। ३६ ।।

रसूल साहब हक के हुकम के बिना और कुछ नहीं बोलते, जबकि कर्म के बन्धनों से बंधकर हिन्दू स्थिर नहीं हैं।

हुए जो ग्यानी अगुए, जिन लिए माएने वेद।
सो ग्यान हिंदुओं आड़ा पड़या, हुआ बड़ा छल भेद।। ३७ ।।

जिन्होंने वेदों को पढ़ा है वह ज्ञानी कहलाए हैं। वेदों का ज्ञान ही हिन्दुओं और परमात्मा के बीच आड़ा (अवरोध) है, इसलिए हिन्दू लोग वेदों के छल से ठगे गए।

तिन अगुओं बांधी दुनियां, किया जोर जब्द।
वैर लगाया या विध, कोई सुने न काहू को सब्द।। ३८ ।।

इन अगुओं ने जबरदस्ती दुनियां को बन्धन में बांध रखा है। इस तरह की दुश्मनी करा दी है कि कोई किसी की सुनता ही नहीं।

तो सत सब्द के माएने, ले न सक्या कोए।
डूबे हिन्दू स्यानपें, सो गए प्यारी उमर खोए।। ३९ ।।

इसलिए सत शब्द (अक्षरातीत की पहचान कराने वाली वाणी) को न ले सकने के कारण हिन्दू लोगों ने अपनी चतुराई में डूबकर अपनी सारी उम्र गंवा दी।

जिन सुध ख्वाब न पार की, सो क्यों समझे ए बात।
और सबों को अटकल, रसूलें देखी हक जात।। ४० ।।

जिन हिन्दुओं को सपने की तथा बेहद की खबर ही नहीं है, वह इस बात को कैसे समझेंगे? हिन्दू सब जगह अनुमान लगाकर बात करते हैं, जबकि रसूल साहब कहते हैं कि मैंने हकजात (मोमिनों) को अर्श में देखा है।

तारी अरवाहें सबन की, चौदे तबक की सृष्ट।
अवतार तीर्थंकर हो गए, किन तारे ना गछ इष्ट।। ४१ ।।

रसूल साहब ने चौदह तबकों (लोकों) की दुनियां को बहिश्तों में अखण्ड कराया, जबकि हिन्दुओं के बड़े-बड़े अवतार और तीर्थंकरों ने किसी एक को भी नहीं तारा (आवागमन से मुक्ति नहीं दी) और इष्ट तक के पास भी नहीं पहुंचाया।

Nijanand App

कोई ऐसा न हुआ इन जहान में, जो तारे अपनी आतम।
यों सब सास्त्र बोलहीं, कहे पुकार निगम।। ४२ ।।

संसार में ऐसा कोई नहीं हुआ जिसने अपने आत्मा को भवसागर से पार निकाला हो, ऐसा सब शास्त्र और वेद कहते हैं।

सो वैराट चौदे तबकों, थावर और जंगम।
सब तारे सचराचर, प्रकास रसूल नूर हुकम।। ४३ ।।

रसूल साहब ने तारतम वाणी के उजाले तथा धनी के हुकम से चौदह लोकों के चर और अचर जीवों की बहिश्त में कायमी कराई।

खेल रसूल हुकमें हुआ, बीच ल्याए रसूल फुरमान।
आखिर भी रसूल आए के, भिस्त दई सब जहान।। ४४ ।।

यह खेल राजजी के हुकम से बना जिसमें रसूल साहब कुरान लेकर आए। आखिरत में भी रसूल साहब इमाम मेंहदी के साथ आकर सारी दुनियां को बहिश्तों में कायम करेंगे।

भिस्त चौदे तबक, देसी दुनियां दीन।
देसी ब्रह्मा रुद्र नारायन को, आखिर दे आकीन।। ४५ ।।

चौदह तबकों के लोगों को बहिश्तों में कायम करेंगे तथा बाद में ब्रह्माजी, शंकरजी और नारायणजी को भी पहचान कराके, यकीन दिलाकर अखण्ड करेंगे।

ए अव्वल का हुकम, आखिर होसी जाहेर।
करसी साफ सबन को, अंतर मांहें बाहेर।। ४६ ।।

यह खुदा का पहले का ही हुकम है जो अब आखिरत में जाहिर होगा। इससे सारी दुनियां अन्दर और बाहर से पाक साफ हो जाएगी।

।। प्रकरण ।। २५ ।। चौपाई ।। ८७० ।।

सनन्ध–दोजख की

नेक कहूं दोजख की, ए जलसी ज्यों कुफरान।
ए जो सब्द रसूल के, अंदर दिल में आन।। १ ।।

दोजख की अग्नि में काफिर लोग कैसे जलेंगे? रसूल साहब के वचनों के अनुसार इसको थोड़ा-सा बताती हूं। इसे तुम दिल में धारण करना।

कुफर चौदे तबक का, इन सब्दों होसी नास।
पर कहा कहूं तिन अगुओं, जिन किए घात विश्वास।। २ ।।

इस वाणी से चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड का कुफ्र मिट जाएगा, किन्तु मैं उन अगुओं (धर्माचार्यों) को क्या कहूं जिन्होंने संसार के साथ विश्वासघात किया है (जिन्होंने धनी का सीधा रास्ता नहीं बताया)।

कुफर सारा काढ़सी, एक पलक में धोए।
खारे जल पछाड़सी, याको धूप जो देसी दोए।। ३ ।।

सारी दुनियां का कुफ्र एक पलक में धुल जाएगा। कुफर और अज्ञानता को तारतम के ज्ञान से निर्मल कर ईमान और इश्क की धूप में निर्विकार बना देंगे।

Nijanand App